07 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

श्रेष्ठ पद की प्राति का आधार - "मुरली"

के पीछे मस्त होने का अनुभव

➢➢ मैं मास्टर मुरलीधर आत्मा

➳ _ ➳ मुरलीधर बाप की मुरली की मधुर साज सुन

→ अपनी देह की सुध-बुध भूल देही बन

→ विदेही बाप की स्नेह में खोई हुई

◆ ना इस दुनिया और

◆ ना ही किसी देहधारी की स्मृति

➳ _ ➳ मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा

→ भाग्य विधाता बाप के सम्मुख बैठी

◆ मस्त होकर मुरली सुन

• खुशी में नाच रही हूँ

➢➢ जैसे-जैसे मुरलीधर की मुरली का नशा चढ़ रहा

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस धरनी और देह से

→ ऊपर उड़ता हुआ अनुभव कर रही हूँ

→ मुरलीधर बाप के साथ अनेक

◆ अनुभवों में खो रही हूँ

➳ _ ➳ तीनों लोकों की सैर कर रही हूँ

→ कभी मूलवतन

→ कभी सूक्ष्मवतन

→ कभी अपने राज्य

◆ का चक्कर लगा रही हूँ

➳ _ ➳ कभी लाइट हाउस माइट हाउस बन

→ इस दु:खी अशान्त संसार की आत्माओं को

◆ सुख-शान्ति की किरणें दे रही हूँ

➳ _ ➳ अतीन्द्रिय सुख के झूले में

→ झूल रही हूँ

➢➢ मुरलीधर की मुरली के साज से

➳ _ ➳ अविनाशी दुआ की दवा मिल गई है

→ तन तन्दुरूस्त

→ मनदुरूस्त हो गया है

➳ _ ➳ मस्ती में मस्त होकर

→ बेपरवाह बादशाह

→ बेगमपुर का बादशाह

→ स्वराज्य-अधिकारी

◆ बन रही हूँ

➢➢ रोज विधिपूर्वक मुरली के हर बोल को सुनकर

➳ _ ➳ सिद्धिस्वरूप बन रही हूँ

→ सुनकर स्वयं में समा रही हूँ

◆ समाकर स्वरुप बन रही हूँ

➳ _ ➳ मुरली के एक-एक बोल का रिगार्ड रख

→ मुरलीधर बाप का रिगार्ड रख रही हूँ

➳ _ ➳ मुरलीधर की मुरली ही

→ मुझ ब्राह्मण जीवन की श्वाँस है

◆ श्वाँस नहीं तो जीवन नहीं

→ एक-एक वरशन

◆ 2500 वर्षों की कमाई का आधार है

◆ पद्मों की कमाई का आधार है

➳ _ ➳ एक- एक वरदान पाकर

→ खज़ानों की खान बन रही हूँ

→ अविनाशी ख़ुशी की मालिक बन रही हूँ

→ सम्पन्न बन रही हूँ

→ अनुभवी आत्मा बन रही हूँ

➳ _ ➳ एक भी दिन मुरली को मिस करना अर्थात

→ उस दिन के वरदान को मिस करना

→ एक वरदान मिस करना माना

◆ पद्मों की कमाई मिस करना

◆ राजाई पद गंवाकर प्रजा बनना

➳ _ ➳ मुरली को विधिपूर्वक सुनने के महत्व को स्मृति में रख

→ श्रेष्ठ गति को प्राप्त हो रही हूँ

→ श्रेष्ठ विधि से श्रेष्ठ नम्बर ले रही हूँ

→ मेरा हर कर्म मुरली का स्वरूप बन रहा है

→ सिद्धिस्वरूप स्वत: और सहज बन रही हूँ

◆ मुरलीधर स्वरूप बन रही हूँ